

न्यारापन ९

१

हृद में दुःख होता है, बेहद में दुःख नहीं होता। क्योंकि बेहद में आने से बेहद का सम्बन्ध, बेहद का ज्ञान, बेहद की वृत्ति, बेहद का रूहानी स्नेह दुःख को समाप्त कर सुख स्वरूप बना देते हैं। रूहानी नालेज के कारण, हर आत्मा की कर्म कहानी के पार्ट के संस्कारों की लाइट और माइट होने के कारण जो भी देखेंगे, सुनेंगे, सम्पर्क में, सम्बन्ध में आयेंगे, हर कर्म में अति न्यारे और अति प्यारे होंगे। न्यारे और प्यारे बनने की समानता होगी। किस समय प्यारा बनना है, किस समय न्यारा बनना है – यह पार्ट बजाने की विशेषता आत्मा को सदा सुखी और शान्त बना देती है। रूहानी सम्बन्ध होने के कारण, बुद्धि सदा एकाग्र रहती है। हलचल में नहीं आते हैं। अभी दुःखी, अभी सुखी यह हलचल समाप्त हो जाती है। साथ-साथ एकाग्रता के कारण निर्णय शक्ति, समाने की शक्ति, सामना करने की

शक्ति, सर्व शक्तियाँ हर आत्मा के पार्ट और अपने पार्ट को अच्छी तरह से जानकर पार्ट में आते हैं। इसलिए अचल और साक्षी रहते हैं।

२

सभी सदा साक्षी स्थिति में स्थित हो हर पार्ट बजाते हो ? साक्षीपन की स्टेज कायम रहती है ? कभी साक्षी के बजाए पार्ट बजातेबजाते पार्ट में साक्षीपन की स्टेज को भूल तो नहीं जाते ? जो साक्षी होगा वह कभी भी किसी पार्ट में चलायमान नहीं होगा। न्यारा होगा, प्यारा भी होगा। अच्छे में अच्छा, बुरे में बुरा ऐसे नहीं होगा। साक्षी अर्थात् सदा हर कार्य करते हुए कल्याण की वृत्ति में रहने वाले। जो कुछ हो रहा है उसमें कल्याण भरा हुआ है। अगर कोई माया का विघ्न भी आता तो उससे भी लाभ उठाकर, शिक्षा लेकर आगे बढ़ेंगे, रुकेंगे नहीं। ऐसे हो ? सीट पर बैठकर खेल देखते हो। साक्षीपन है सीट। इस सीट पर बैठकर ड्रामा देखो तो बहुत मजा आयेगा। सदा अपने को साक्षी की सीट पर सेट रखो, फिर वाह ड्रामा वाह! यही गीत गाते रहेंगे।

३

जब चाहें शरीर का आधार लें और जब चाहें शरीर का आधार छोड़ कर अपने अशरीरी स्वरूप में स्थित हों जायें क्या ऐसे अनुभव चलते-फिरते करते रहते हो ? जैसे शरीर धारण किया वैसे ही फिर शरीर से न्यारे हो जाना इन दोनों का क्या एक ही अनुभव करते हो ? यही अनुभव अन्तिम पेपर में फर्स्ट नम्बर लाने का आधार है। जो लास्ट पेपर देने के लिए अभी से तैयार हो गये हो या हो रहे हो ?

४

सर्व खजानों से जो सम्पन्न आत्मा है उसकी निशानी सदा नयनों से, चेहरे से, चलन से खुशी औरों को भी अनुभव होगी। जो भी आत्मा सम्पर्क में भी आयेगी वह अनुभव करेगी कि यह आत्मा अलौकिक खुशी से, अलौकिक न्यारी दिखाई देती है। आपकी खुशी को देख दूसरी आत्मायें भी थोड़े समय के लिए खुशी अनुभव करेंगी। जैसे आप ब्राह्मण आत्माओं की सफेद ड्रेस सभी को कितनी न्यारी और प्यारी लगती है। स्वच्छता, सादगी और पवित्रता अनुभव होती है। दूर से ही जान जाते हैं यह ब्रह्माकुमार कुमारी है। ऐसे ही

आप ब्राह्मण आत्माओं के चलन और चेहरे से सदा खुशी की झलक, खुशानसीब की फलक दिखाई दे। आज सर्व आत्मायें महान दुःखी हैं, ऐसी आत्मायें आपका खुशानुमः चेहरा देख, चलन देख एक घड़ी की भी खुशी की अनुभूति करें, जैसे प्यासी आत्मा को अगर एक बूंद पानी की मिल जाती है तो कितना खुश हो जाता है।

५

एकाग्रता की शक्ति से स्वतः ही सर्व प्रति स्नेह, कल्याण, सम्मान की वृत्ति रहती ही है क्योंकि एकाग्रता अर्थात् स्वमान की स्थिति। फरिश्ता स्थिति स्वमान है। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, वर्णन भी करते हो जैसे सम्पन्नता का समय समीप आता रहा तो क्या देखा? चलता-फिरता फरिश्ता रूप, देहभान रहित। देह की फीलिंग आती थी? सामने जाते रहे तो देह देखने आती थी या फरिश्ता रूप अनुभव होता था? कर्म करते भी, बातचीत करते भी, डायरेक्शन देते भी, उमंग-उत्साह बढ़ाते भी देह से न्यारा, सूक्ष्म प्रकाश रूप की अनुभूति की। कहते हो ना कि ब्रह्मा बाबा बात करते-करते ऐसे लगता था जैसे बात कर भी रहा है लेकिन यहाँ नहीं है, देख रहा है लेकिन दृष्टि अलौकिक है, यह स्थूल दृष्टि नहीं है। देह-भान से न्यारा,

दूसरे को भी देह का भान नहीं आये, न्यारा रूप दिखाई दे, इसको कहा जाता है देह में रहते फरिश्ता स्वरूप। हर बात में, वृत्ति में, दृष्टि में, कर्म में न्यारापन अनुभव हो। यह बोल रहा है लेकिन न्यारा-न्यारा, प्यारा-प्यारा लगता है। आत्मिक प्यारा।

६

सभी अपने को देह से न्यारे और बाप के प्यारे अनुभव करते हो ? जितना देह से न्यारे बनते जायेंगे उतना ही बाप के प्यारे बनेंगे। बाप प्यारा तब लगता है जब देह से न्यारे देही रूप में स्थित होते। तो सदा इसी अभ्यास में रहते हो ? जैसे पाण्डवों की गुफायें दिखाते हैं ना, तो गुफायें कोई और नहीं हैं, लेकिन पाण्डव इन्हीं गुफाओं में रहते हैं। इसी को ही कहा जाता है अन्तर्मुखता। जैसे गुफा के अन्दर रहने से बाहर के वातावरण से परे रहते हैं ऐसे अन्तर्मुखी अर्थात् सदा देह से न्यारे और बाप के प्यारे रहने के अभ्यास की गुफा में रहने वाले दुनिया के वातावरण से परे होते। वह वातावरण के प्रभाव में नहीं आ सकते। जो बाप का प्यारा होगा वैसा ही बनेगा। बाप सदा न्यारा है तो जो बाप का प्यारा होगा वह भी सदा न्यारा होगा।

तो सदा न्यारे रहो यही अभ्यास चलता रहे इसके सिवाए नीचे नहीं आओ।

७

देह, देह के सम्बन्ध, देह संस्कार, व्यक्ति या वैभव, वायब्रेशन, वायुमण्डल सब होते हुए भी आकर्षित न करे। इसी को ही कहते हैं नष्टोमोहा समर्थ स्वरूप। तो ऐसी प्रैक्टिस है? लोग चिल्लाते रहें और आप अचल रहो। प्रकृति भी, माया भी सब लास्ट दौंव लगाने लिए अपने तरफ कितना भी खींचे लेकिन आप न्यारे और बाप के प्यारे बनने की स्थिति में लवलीन रहो। इसको कहा जाता देखते हुए न देखो। सुनते हुए न सुना। ऐसा अभ्यास हो। इसी को ही स्वीट साइलेन्स स्वरूप की स्थिति कहा जाता है। फिर भी बापदादा समय दे रहा है। अगर कोई भी कमी है तो अब भी कर सकते हो। क्योंकि बहुतकाल का हिसाब सुनाया। तो अभी थोड़ा चांस है। इसलिए इस प्रैक्टिस की तरफ फुल अटेन्शन रखो। पास विद आनर बनना या पास होना यह आधार असी अभ्यास पर है। ऐस अभ्यास है?

८

सारे दिन में समय प्रति समय, जब भीसमय मिले स्वीट साइलेन्स में चले जाओ। अनुभव में खो जाओ - बहुत अच्छा लगेगा। अशरीरी बनने का अभ्यास सहज हो जायेगा। क्योंकि अन्त में अशरीरीपन का अभ्यास ही काम में आयेगा। सेकेण्ड में अशरीरी हो जायें। चाहे अपना पार्ट भी कोई चल रहा हो लेकिन अशरीरी बन आत्मा साक्षी हो अपने शरीर का भी पार्ट देखे। मैं आत्मा न्यारी हूँ, शरीर से यह पार्ट करा रही हूँ। यही न्यारेपन की अवस्था अन्त में विजयी या पास विद् ऑनर का सर्टिफिकेट देंगी। सभी पास विथ ऑनर होने वाले हो ?

९

सदा स्वयं को चलते-फिरते फरिश्ते अनुभव करते हो ? फरिश्ता अर्थात् जिसका देह के वा देह के दुनिया से वा देह के पदार्थों के आकर्षण से कोई रिश्ता नहीं। सदा बाप की याद और सेवा – इसी में रहने वाले। सदा बाप और सेवा – यही लग्न रहती है ? सिवाए बाप और सेवा के और क्या है जहाँ बुद्धि जाए ? ट्रस्टी सदा न्यारा रहता है। ट्रस्टी के लिए सिर्फ एक काम है – याद और सेवा। अगर

कर्मणा भी करते तो भी सेवा के निमित्त। गृहस्थी स्वार्थ के निमित्त करता और ट्रस्टी सेवा अर्थ।

१०

जो माया वा विघ्नों से कभी धोखा नहीं खाता वह सदा ऐसे दिखाई देगा जैसे इस दुनिया से न्यारा और प्यारा है। तो कमल पुष्प समान रहते हो कि कीचड़ के छींटे पड़ जाते? अगर श्रीमत पर हर कदम उठाएं तो सदा कमल पुष्प रहेंगे। मनमत मिक्स होने से सदा कमल नहीं रह सकते। संसार सागर की कोई लहर का प्रभाव पड़ना अर्थात् पानी के छींटे पड़ना।

११

सेकेण्ड में अशरीरी हो जायें, जिसकी यह ड्रिल पक्की होगी वह सभी परिस्थितियों का सामना कर सकते हैं। जैसे शारीरिक ड्रिल सुबह को कराई जाती है वैसे यह अव्यक्त ड्रिल भी अमृतबेले विशेष रूप से करना है। करना तो सारा दिन है लेकिन विशेष प्रैक्टिस करने का समय अमृतबेले है। जब देखो बुद्धि बहुत बिजी है तो उसी समय यह प्रैक्टिस करो। परिस्थिति में होते हुए भी हम

अपनी बुद्धि को न्यारा कर सकते हैं। लेकिन न्यारे तब हो सकेंगे जब जो भी कार्य करते हो वह न्यारी अवस्था में होकर करेंगे। अगर उस कार्य में अटैचमेंट होगी तो फिर एक सेकेण्ड में डिटैच नहीं होंगे। इसलिए यह प्रैक्टिस करो। कैसी भी परिस्थिति हो। क्योंकि फाइनल पेपर अनेक प्रकार के भयानक और न चाहते हुए भी अपने तरफ आकर्षित करने वाली परिस्थितियों के बीच होंगे। उनकी भेंट में जो आजकल की परिस्थितियां है वह कुछ नहीं हैं। जो अन्तिम परिस्थिति आने वाली है, उन परिस्थितियों के बीच पेपर होना है। इसकी तैयारी पहले से करनी है। इसलिए जब अपने को देखो कि बहुत बिज़ी हूँ, बुद्धि बहुत स्थूल कार्य में बिजी है, चारों ओर सरकमस्टान्सेज अपने तरफ खैंचने वाली है तो ऐसे समय पर यह अभ्यास करो। तब मालूम पड़ेगा कहाँ तक हम ड्रिल कर सकते हैं। यह भी बात बहुत आव-श्यक है।